जीते जी मरने का यादगार - श्राद्ध

क्यों करते हैं हम श्राद्ध अर्थात पितृ पक्ष
पूर्वजो के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि का राज़ जानें होकर निष्पक्ष
श्राद्ध अर्थात पूर्वजो के स्नेह और पालना के ऋण की अदायगी
जिनकी उपस्थिति हम करते सदा अनुभव जैसे खुशबू महकी-महकी

ये अवसर देता उनकी क़ुर्बानियों और आशीषों का करना स्मरण
उनकी महान शिक्षाओं के द्वारा चमकाना जीवन दर्पण
उनकी खुशहाली और भलाई – यही है उद्देश्य इसका
वो सदा करते रहे विश्व का कल्याण सर्वदा

देह को धारण करना और छोड़ना है प्रक्रिया सामान्य
आत्माएँ बजातीं इस सृष्टि पर पार्ट, बीतता जाता समय
क्यों करते हैं श्राद्ध, आओ करें सकारात्मक चिंतन

इन परंपराओं से आगे बढ़कर, करें सत्य धर्म का पालन

सोने की चिड़िया कहलाने वाला भारत अब बना दुखों का संसार
यही था कभी शिवालय, अब बना वैश्यालय अपार.
कोई भी घड़ी हो सकती है अन्तिम, चहूँ ओर मचा हाहाकार,
ऐसे समय में हुए अवतरित कल्याणकारी शिव निराकार.

ब्रह्मा मुख कमल से देते वो सच्चा गीता ज्ञान
अब अन्तिम समय आ पहुँचा विकारो का दे दो दान
आत्म अभिमानी बनकर करो मुझ परमपिता को याद
जीते जी मरके इस पुरानी दुनिया से, करो बेहद का श्राद्ध.